HINDUSTAN PAGE 6

विश्वविद्यालय में इटली की छात्रा करेगी शोध, पहली बार ईरान से छात्र आए

एलयू में इस बार 135 विदेशी छात्र

गर्व के पल

लखनऊ | वरिष्ठ संवाददाता

कोरोना काल के बावजूद पहली बार लखनऊ विश्वविद्यालय में बड़ी संख्या में विदेशी छात्र दाखिले के लिए आए हैं। करीब 135 छात्र-छात्राओं को यहां दाखिले की अनुमति दी गई है। यह एक रिकॉर्ड है।

पहली बार इटली से एक छात्रा ने यहां प्रवेश लिया है। वह लखनऊ विश्वविद्यालय में हिंदी में शोध करने आ रही है। जानकारी के अनुसार इटली की जियोवाना कार्मेला कार्डेलिया और मॉरिशस की लक्ष्मिन भीमादेवी ने हिन्दी से पीएचडी करने के लिए आवेदन किया है।

वहीं ईरान से चार विद्यार्थियों ने एमबीए पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया है। ईरान से भी छात्र लखनऊ विश्वविद्यालय पहली बार आ रहे हैं।

इस बार लविवि ने करीब 135 विदेशी छात्रों को प्रवेश के लिए अनुमति दी है। सबसे ज्यादा 52 विद्यार्थी अफगानिस्तान से हैं। इथोपिया, लिसोथो, नाबीबिया, थाईलैंड समेत कई अन्य देशों से भी छात्र पढ़ने आ रहे हैं। लविवि के इंटरनेशनल स्टूडेंट्स एडवाइजर प्रो. एए अय्यूबी ने बताया कि इन छात्रों को 12 नवम्बर तक रिपोर्ट करने को कहा गया है। कोरोना के कारण हवाई यात्रा अभी भी प्रभावित है। इन्हें कुछ अतिरिक्त समय मिल सकता है।

52
छात्र अकेले अफगानिस्तान से आएंगे इस बार लखनऊ विश्वविद्यालय में पढ़ने

लखनऊ विश्वविद्यालय में धीरे-धीरे रौनक वापस लौटने लगी है। बुधवार को परिसर में छात्र-छात्राएं।

तीन करोड़ तक मिल सकता सहयोगः प्रो. एए अय्यूबी का कहना है कि पिछले सत्र में इन छात्रों से विवि को करीब 1.12 करोड़ का आर्थिक सहयोग मिला था। उनका कहना है कि इस बार विदेशी छात्रों की संख्या में इजाफा होने से यह ढ़ाई से तीन करोड़ तक पहुंचने की उम्मीद है।

चार साल में सबसे ज्यादा छात्र इस बार

- 2016 में सिर्फ आठ विदेशी छात्रों ने दाखिला लिया था।
- 2018 में 33
- 2019 में 52
- 2020 में यह संख्या 135 तक पहुंच गई है।

एनसीसी नेवल यूनिट के लिए चयन 3 को

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय की एनसीसी नेवल बटालियन के लिए चयन आगामी 3 नवंबर को किया जाएगा। इसका कार्यक्रम बुधवार को जारी कर दिया गया है। इसके मुताबिक लखनऊ विश्वविद्यालय में स्नातक प्रथम वर्ष में दाखिला लेने वाले छात्रों को बटालियन में शामिल होने का मौका मिलेगा। जानकारी के अनुसार छात्रों को सुबह 6 बजे 3 यूपी नेवल यूनिट में रिपोर्ट करना होगा। इसके बार छात्रों का चयन किया जाएगा। चयन होने के बाद एनसीसी नेवल बटालियन के लिए प्रशिक्षण का काम शुरू किया जाएगा।

SAMRIDDHI NEWS PAGE 3

मनोविज्ञान विभाग व हार्टफुल कैंपस के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम हुआ सम्पन्न

लखनऊ, समृद्धि न्यूज।

लखनऊ विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग एवं हार्टफुल कैंपस के संयुक्त तत्वाधान में तीन दिवसीय ऑनलाइन वेबिनार श्रृंखला का आयोजन किया गया। यह तीन दिवसीय श्रृंखला 26 अक्टूबर 2020 से 28 अक्टूबर 2020 तक आयोजित की गई है । प्रथम दिवस का विषय रहा उच्च निष्पादन हेतु क्षमता का विकास य दूसरे दिन का विषय रहा (तनाव प्रबंधन) एवं तीसरे दिन का विषय रहा श्अनिश्चितता से निपटना एवं संकट के समय लचीलापन। कार्यक्रम का सम्पादन जूम प्लेटफार्म के माध्यम से हुआ एवं वह यूट्यूब पर लाइव भी प्रसारित किया गया ।

प्रथम दिन 26 अक्टूबर को कार्यक्रम के अंतर्गत हार्टफेल कैंपस की विषय विशेषज्ञ डॉ. रिकिता स्वरुप के द्वारा व्यक्तित्व के पूर्ण विकास के लिए हृदय एवं मन के बीच नियंत्रण हेतु उपयोगी सुझाव छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किए गए ताकि वह अपने दैनिक जीवन में आने वाली चुनौतियों को बेहतर तरीके से समझ सके। कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतिभागियों के द्वारा प्रश्नों के उत्तर पूछे गए एवं अपने विचारों को अन्य लोगों के साथ साझा किया गया।

डॉ. ललित कुमार सिंह के द्वारा संचालित अपराहन के कार्यक्रम की शुरुआत में हार्टफुलनेस कैंपस के विषय विशेषज्ञों के द्वारा मन को नियंत्रित करने एवं समझने से जुड़े हुए अत्यंत महत्वपूर्ण सुझाव छात्रों के साथ साझा किए गए। कार्यक्रम का समापन मनोविज्ञान विभाग की प्राध्यापिका डॉ. मेघा सिंह द्वारा धन्यवाद ज्ञापन से हुआ। वेबिनार के दूसरे दिन हार्टफुल कैंपस के विषय विशेषज्ञ प्रोफेसर श्याम जी मेहरोत्रा के द्वारा तनाव प्रबंधन के ऊपर बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी साझा की गई। कार्यक्रम के तीसरे दिन के विषय विशेषज्ञ हार्टफुल कैंपस के डॉ. आशीष जौहरी रहे जो कि सिनर्जी एच आर नामक संस्था में प्रिन्सिपल कंसलटेंट हैं । डॉ. आशीष जौहरी के द्वारा ष्अनिश्चितता से निपटना एवं संकट के समय लचीलापनष् विषय पर उद्बोधन दिया गया।

एलयू शताब्दी समारोह के लिए 14 समितियां

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में शताब्दी वर्ष समारोह के आयोजन के लिए बुधवार को 14 समितियां गठित की गई हैं। समारोह की संचालन समिति की कमान कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने अपनी हाथ में रखी है। प्रो. निशी पांडेय को तीन समितियों की अध्यक्ष बनाया गया है।

बता दें कि लखनऊ विश्वविद्यालय इस साल अपने सौ वर्ष पूरे करने जा रहा है। इस मौके पर 19 से 25 नवम्बर तक विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर कई सांस्कृतिक आयोजन भी होंगे।

TOI PAGE 3

Anup Jalota to dedicate song to LU, get BA degree after 50 years

TOI

Mohita.Tewari@timesgroup.com

NOTES OF FAME: A seven-year-old Anup Jalota performing in Lucknow (left) and the singer poses with the 75 gold and platinum discs gifted to him by Pandit Ravishankar in 1986

Lucknow: He joined Lucknow University not to study, but to fulfil a promise made to his father that he would complete his education before stepping into the world of music. The singing sensation grew bigger with time, but in his heart the music of 'Lucknow Vishwavidyalaya' tops the playlist. Renowned bhajan singer Anup Jalota will be back in LU after nearly five decades and will dedicate a song 'Sabse sunder vishwavidyalaya, yeh hai Lucknow Vishwavidyalaya', which he himself has penned, to the institution.

On the occasion, he will be awarded his BA degree that he couldn't collect.

"I joined the university in 1971 just for a degree, but fell in love with teachers and the campus where I sat and sang for hours," said Jalota. He added: "I am happy to join the varsity during its 100th year celebration."

Talking to TOI, Jalota fondly recalled how on every special occasion, he would sing for his professors. Then it was not 'bhajans' but the famous Bollywood numbers of the 70s. "I had political science, sociology, Hindi and English literature in BA. I was not very fond of studies as I was completely into music. I bunked English classes most often," said Jalota.

He said every single day spent in the university is a beautiful memory, but the 'badmashi' and bunking memories are close to the heart. "The memory of my English teacher, Prof Raj Bisaria, a renowned director, is still fresh. Once he asked me to leave the class as I was the most irregular student," said Jalota. "When I went to attend his lecture after a gap of many days, Prof Bisaria, who was taking attendance, called out my name and the moment I said 'present sir', he stared at me and said 'Aap yahan kyu aaye hai, aise kyun meherbani ki apne, aap jaiye, aapne aisee zehmat kaise uthayi (Why are you here? Don't take pains to attend class)."

"I had attended only one class in that session, his anger was obvious so I silently left the class. I respect him immensely. It is teachers like him who make students realise their mistakes and help them improve," he added.

He said the university was a place where professors recognized students' talents and appreciated their evefry effort.

"There was a teacher who knew I am good at singing and asked me how my music lessons were going on. I used to sing for teachers of political science, not Bhajans but Bollywood songs like 'main shayar to nahin'. I was very popular among the faculty," he added.

"I used to finish a three-hour exam in just one hour...only to score passing marks and meet my music goals. Because I was popular, my friends wanted me to contest student union elections, but I told them that I wanted to take up music," Jalota said but added, "I used to canvass for my friends contesting the elections, sitting in the lawns opposite the political science department. I also polished my skills in the many cultural events organised."